श्री वीतराग-विज्ञान विद्यापीठ परीक्षा बोर्ड

श्री टोडरमल स्मारक भवन

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राजस्थान)

शीतकालीन परीक्षा - कार्यक्रम -2010

दिन व दिनांक	नाम ग्रन्थ
शुक्रवार 29 जनवरी 2010	1. बालबोध पाठमाला भाग 1 (बालबोध प्रथम खण्ड) मौखिक 2. जैन बालपोथी भाग 1 (मौखिक) 3. वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग 1 (प्रवेशिका प्रथम खण्ड) 4. तत्त्वज्ञान पाठमाला भाग 1 5. छहढाला (पूर्ण) 6. तत्त्वार्थसूत्र (मोक्षशास्त्र) पूर्वार्द्ध 7. मोक्षमार्गप्रकाशक (पूर्वार्द्ध) 8. जैन सिद्धान्त प्रवेशिका (गोपालदासजी बरैया कृत) 9. विशारद प्रथम खण्ड (प्रथम वर्ष)
शनिवार 30 जनवरी 2010	1. बालबोध पाठमाला भाग 2 (बालबोध द्वितीय खण्ड) मौखिक 2. जैन बालपोथी भाग 2 (मौखिक) 3. वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग 2 (प्रवेशिका द्वितीय खण्ड) 4. तत्त्वज्ञान पाठमाला भाग 2 5. द्रव्यसंग्रह (पूर्ण) 6. तत्त्वार्थसूत्र (मोक्षशास्त्र) उत्तरार्द्ध 7. लघु जैनसिद्धान्त प्रवेशिका (सोनगढ़) 8. मोक्षमार्गप्रकाशक (उत्तरार्द्ध) 9. विशारद द्वितीय खण्ड (प्रथम वर्ष) 10. विशारद प्रथम खण्ड (द्वितीय वर्ष)
रविवार 31 जनवरी 2010	1. बालबोध पाठमाला भाग 3 (बालबोध तृतीय खण्ड) मौखिक 2. वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग 3 (प्रवेशिका तृतीय खण्ड) 3. रत्नकरण्ड श्रावकाचार (पूर्ण) 4. पुरुषार्थसिद्ध्युपाय (पूर्ण) 5. विशारद द्वितीय खण्ड (द्वितीय वर्ष)

नोट - (1) सुविधानुसार परीक्षा का समय प्रात: 9 से शाम 5 बजे के बीच कभी भी सैट कर सकते हैं।
(2) जहाँ एक से अधिक केन्द्र हों, वे आपस में मिलकर समय निश्चित करें।
(3) किन्हीं विषयों के छात्र आपस में टकराते हों तो परीक्षा सुविधानुसार दिन में दो बार ली जा सकती है।
(4) बालबोध पाठमाला भाग 1, 2, 3 और जैन बालपोथी भाग 1 व 2 की परीक्षायें मौखिक में लेवें।
शेष सभी विषयों की परीक्षायें लिखित में लेवें। **ह्न ओमप्रकाश आचार्य (प्रबंधक ह्न परीक्षा बोर्ड)**

वीतराग-विज्ञान

**वीतराग-विज्ञान ही, तीन लोक में सार।
वीतराग-विज्ञान का , घर-घर होय प्रसार।।**

वर्ष : 28 318 अंक : 6

श्री गुरु सीख सयानी

सुन ज्ञानी प्राणी, श्रीगुरु सीख सयानी।।टेक।।
नरभव पाय, विषय मति सेवो, ये दुरगति अगवानी।
सुन ज्ञानी प्राणी, श्रीगुरु सीख सयानी।।1।।
यह भव कुल यह तेरी महिमा, फिर समझी जिनवाणी।
इस अवसर में यह चपलाइ, कौन समझ उर आनी।।
सुन ज्ञानी प्राणी, श्रीगुरु सीख सयानी।।2।।
चंदन काठ कनक के भाजन, भरि गंगा का पानी।
तिल खल रांधत मंदमती जो, तुझ क्या रीस बिरानी।।
सुन ज्ञानी प्राणी, श्रीगुरु सीख सयानी।।3।।
भूधर जो कथनी सो करनी, यह बुधि है सुखदानी।
ज्यों मशालची आप न देखे, सो मति करै कहानी।।
सुन ज्ञानी प्राणी, श्रीगुरु सीख सयानी।।4।।

- कविवर पण्डित भूधरदासजी

छहढाला प्रवचन

मिथ्याचारित्र का स्वरूप

जो कुगुरु-कुदेव-कुधर्म सेव, पोषै चिर दर्शनमोह एव।
अन्तर रागादिक धरैं जेह, बाहर धन-अम्बरतैं सनेह।।९।।
धारैं कुलिंग लहि महत भाव, ते कुगुरु जन्मजल उपल नाव।
जो राग-द्वेष मलकरि मलीन वनिता-गदादिजुतचिह्नचीन।।१०।।
ते हैं कुदेव, तिनकी जु सेव शठ करत, न तिन भवभ्रमण छेव।
रागादि भावहिंसा समेत, दर्वित त्रस-थावर मरण खेत।।११।।
जे क्रिया तिन्हैं जानहु कुधर्म, तिन सरधै जीव लहै अशर्म।
याकूँ गृहीत मिथ्यात्व जान, अब सुन गृहीत जो है अज्ञान।।१२।।

(सुप्रसिद्ध आध्यात्मिक विद्वान दौलतरामजीकृत छहढाला पर गुरुदेवश्री के प्रवचन पाठकों के लाभार्थ यहाँ प्रस्तुत किये जा रहे हैं।)

(गतांक से आगे....)

प्रश्न : कोई कुगुरु मिल जाय तो क्या करना ?

उत्तर : तो ऐसा जानना कि यह सच्चा गुरु नहीं है, वह स्वयं भी मिथ्याभाव से दुःखी है और उसका सेवन करनेवाला जीव भी मिथ्याभाव की पुष्टि से दुःखी है ह्न ऐसा समझकर हमें उसका सेवन छोड़ना चाहिये। इसमें किसी का अपमान करने की या द्वेष करने की बात नहीं है; अपितु अपने आत्मा को मिथ्यात्वादि दोषों से बचाने की बात है।

सच्ची बात में भी किसी को दुःख लगता हो तो उसका भाव उसके पास रहा, इससे हमें क्या? यह तो सम्यक् भाव से स्वयं अपना हित करने की बात है।

धर्म में शर्म नहीं होती अर्थात् शर्म से या लोकलाज से भी कुगुरुओं का सेवन धर्मी जीव नहीं करते। अपना हित चाहनेवाले मुमुक्षु जीव को दुनिया की स्पृहा नहीं होती, दुनिया क्या बोलेगी ?ह्न यह देखने को वे नहीं रुकते, दुनिया से डरकर असत् देव-गुरु-धर्म का सेवन भी वे कभी नहीं करते; प्राण चले जायें तो भी सच्चे देव-गुरु-धर्म से विपरीत किसी को नहीं मानते। उनको अपने अन्तर में वीतरागता ही इष्ट है; अतः वे बाहर में भी वीतरागता के ही पोषक देव-गुरु-धर्म को स्वीकार करते हैं। अन्तर में शुद्ध चैतन्यस्वभाव के अतिरिक्त राग के किसी भी अंश को वे धर्म नहीं मानते और बाह्य में राग के पोषक कुदेव-कुगुरु-कुधर्म को भी

नहीं मानते। इसप्रकार वीतरागमार्गी जीव निडर और निःशंक होकर आत्महित को साधते हैं। किसी कुगुरु को समाज के बहुत लोग मान रहे हैं और यदि मैं नहीं मानूं तो दुनियाँ मुझे क्या कहेगी? और समाज में मैं अकेला हो जाऊँगा ह्न ऐसा भय धर्मी को नहीं होता।

मात्र शस्त्रधारी या वस्त्रधारी ही कुगुरु होते हैं ह्न ऐसा नहीं है; किन्तु जो वस्त्र-शस्त्ररहित नग्न-दिगम्बर होकर भी वीतरागी मार्ग से स्पष्टत: विपरीत प्ररूपणा करते हैं; वे भी कुगुरु हैं, उनको भी धर्मी जीव नहीं मानते। भाई ! यह तो तेरे हित की बात है।

प्रश्न : किन्तु किसी कुगुरु के साथ पहले का परिचय हो उसका क्या करना?

उत्तर : पूर्व के परिचित हो तो भी कुगुरु का सेवन तो नहीं करना चाहिए; क्योंकि वह अहित का कारण है। जैसे बचपन का साथी अज्ञान से जहर खा रहा हो तो क्या उस साथी के साथ आप भी जहर खा लेते हैं ? ह्न नहीं; अपितु उसका निषेध ही करते हैं कि भाई ! तुम जहर मत खाओ। तुम जहर खा रहे हो तो मैं भी तुम्हारे साथ जहर खाऊँगा ह्न ऐसा साथीपना नहीं होता। जैसे जहर का साथीपना तो छोड़ने के लिये ही होता है; वैसे ही मिथ्यात्वरूपी जहरवाले विपरीत मार्गी का साथ छोडने योग्य ही है।

उनको माननेवाले और उसका उपदेश देनेवाले कुगुरुओं की विनय या सेवा करने से भी मिथ्यात्व की पुष्टि होती है और भावमरण से आत्मा दुःखी होता है; अतः वह छोड़ने योग्य है और वीतरागी देव-गुरु-धर्म के सत्संग से सच्ची श्रद्धा-ज्ञान करने योग्य है।

जैसे कुगुरु और सच्चे गुरु का स्वरूप दिखाकर कुगुरु का सेवन छोड़ने को कहा, वैसे ही कुदेव और सच्चे देव का स्वरूप पहचानकर कुदेव का सेवन भी छोड़ने योग्य है; क्योंकि कुदेव का सेवन भी मिथ्यात्व की पुष्टि करनेवाला है।

मूर्ख अज्ञानी लोग राग-द्वेष के कार्य सहित और गदा-चक्र-धनुष-बाण आदि चिह्नों से सहित रागी-द्वेषी मनुष्य को भगवान मानकर पूजते हैं, सो कुदेव-सेवन है। राक्षसों को मारकर भक्तों की रक्षा करने का कार्य वीतरागी भगवान नहीं करते; भगवान को किसी के प्रति राग-द्वेष नहीं होता। वीतरागी होने के पहले राजा-महाराजा जैसी सरागदशा में ऐसा भाव हो सकता है; किन्तु उस समय वे देवरूप से पूजनीय नहीं हैं। जब वे सरागभाव छोड़कर, मुनि होकर वीतरागी-सर्वज्ञ हुए, तभी सच्चे देव हुए, वे ही पूजनीय हैं। वीतरागी को वीतरागीस्वरूप से न पहचानकर कोई सरागी मान ले तो उसकी मान्यता में कुदेव का सेवन होता है; परन्तु इससे वीतरागी भगवान तो सरागी नहीं हो जाते। सर्वज्ञ-वीतरागीदेव की पहचान करनेवाले को अपने सच्चे भाव का लाभ होता है और सच्चे देव का स्वरूप विपरीत माननेवाले को अपने स्वयं के विपरीत भाव से नुकसान होता है। स्वयं भगवान तो अपने वीतराग स्वरूप में ही विराजमान हैं।

जैसे ह्न भगवान महावीर, भगवान रामचन्द्रजी, हनुमानजी, भीमजी आदि ह्न ये कुदेव नहीं हैं, ये तो सर्वज्ञ-वीतरागी परमात्मा होकर मोक्ष में विराजमान हैं, अब उन्हें अवतार नहीं है; ऐसे स्वरूप से उनको पहचानकर पूजनादि करना योग्य है और वह सुदेवपूजन है; परन्तु ये परमात्मा

(शेष पृष्ठ - 25 पर ...)

नियमसार प्रवचन

निज आत्मा ही उपादेय है

परमपूज्य सर्वश्रेष्ठ दिगम्बराचार्य कुन्दकुन्द के प्रसिद्ध परमागम नियमसार के शुद्धभावाधिकार की 38 वीं गाथा पर हुये आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के अध्यात्मरस गर्भित प्रवचनों का संक्षिप्त सार यहाँ दिया जा रहा है।

गाथा मूलत: इसप्रकार है ह्न

जीवादिबहित्तच्चं हेयमुवादेयमप्पणो अप्पा।
कम्मोपाधिसमुब्भवगुणपज्जाएहिं वदिरित्तो ।।३८ ।।

(हरिगीत)

जीवादि जो बहितत्त्व हैं, वे हेय हैं कर्मोपधिज।
पर्याय से निरपेक्ष आतमराम ही आदेय है।।३८।।

जीवादि बाह्यतत्त्व हेय हैं; कर्मोपाधिजनित गुणपर्यायों से निरपेक्ष आत्मा ही आत्मा को उपादेय हैं।

(गतांक से आगे...)

आस्रव : जीव की पर्याय में होनेवाले दया, दानादि के परिणाम पुण्य हैं; हिंसा, झूठ आदि के परिणाम पाप हैं - दोनों ही आस्रव हैं। अकेले पाप को आस्रव माने और पुण्य को आस्रव न माने; अपितु उससे संवर माने; उसकी तो व्यवहारश्रद्धा भी सच्ची नहीं है। आस्रव से जीव को लाभ न माने, उससे संवर-निर्जरा भी न माने; जिस भाव से तीर्थंकर नामकर्म बंधता है, वह भी आस्रव है और वह विकार है। आस्रव आत्मा का वास्तविक स्वरूप नहीं है। वह जीव में से निकल जाता है, इसलिए परद्रव्य है; अतः हेय है, छोड़ने योग्य है।

जो पुण्य से धर्म माने उसकी तो बात है ही नहीं। पुण्य से धर्म नहीं होता, वह तो बन्ध का ही कारण है ह्न इसप्रकार रागसहित का विकल्प भी परद्रव्य है; चैतन्य द्रव्य नहीं। चैतन्यद्रव्य तो अनादि-अनन्त एकरूप रहता है। उसमें होनेवाला संपूर्ण विकार परद्रव्य कहकर हेय बताया गया है।

बंध : जीव अपनी पर्याय में होनेवाले दया-दानादि में अटकता है, वह भावबंध है। उसका निमित्त पाकर कर्म का बंध पड़ता है, वह द्रव्यबंध है। ये दोनों ही परद्रव्य हैं; आत्मद्रव्य नहीं हैं, इसलिये ये दोनों ही ह्न भावबंध और द्रव्यबंध हेय कहे गए हैं।

संवर-निर्जरा : संवर-निर्जरा आत्मा के आश्रय से प्रगटी हुई निर्मल पर्यायें हैं। इन

पर्यायों का आश्रय करने से निर्मल पर्याय प्रगट नहीं होती। पर्याय का आश्रय लेने जाये तो राग की उत्पत्ति होती है। धर्म की पर्याय, धर्म की पर्याय के आधार से भी प्रगट नहीं होती; किन्तु धर्मी अर्थात् निजशुद्धद्रव्य के आधार से प्रगट होती है।

छठे गुणस्थान में मुनि के चारित्रदशा प्रगट हुई है। उस चारित्र की प्रगटी हुई पर्याय के आधार से चारित्र न तो प्रगट ही होता है और न वर्द्धमान ही होता है। संवर-निर्जरारूप पर्याय के लक्ष्य से राग की ही उत्पत्ति होती है; अतः उसे परद्रव्य मानकर हेय कहा है।

मोक्ष : मोक्ष आत्मा के आश्रय से प्रगट होनेवाली पूर्णनिर्मलपर्याय है। साधक जीव को वर्तमान में वह प्रगट नहीं होती है। जो प्रगट नहीं है, उसका विचार करने जाये तो राग की उत्पत्ति होती है; अतः इस अपेक्षा से उसे परद्रव्य कहा है।

संवर-निर्जरा-मोक्ष पर्याय है, पर्याय अंश है; अंश अंशी में से आता है; किन्तु अंश अंश में से नहीं आता। पर्याय का आश्रय लेने जाये तो विकल्प उठता है; अत: पर्याय की गणना परद्रव्य में करके उसे हेय कहा है।

इस भाँति सातों तत्त्वों का रागमिश्रित विचार करना आदरणीय नहीं है, हेय है। सिद्ध तथा केवली इस जीव के लिए परजीव हैं। 'मैं जीव हूँ' ह्न ऐसा विकल्प भी सम्यग्दर्शन का ध्येय बनाने के लिये आदरणीय नहीं है। यह बात सर्वज्ञ के अलावा अन्यत्र नहीं है। जो जीव सच्चे देव, शास्त्र, गुरु को तथा सात तत्त्वों को व्यवहार से भी नहीं मानते, उनकी तो यहाँ बात ही नहीं है; अपितु जो जीव सच्चे देव, निर्ग्रंथ गुरु और सर्वज्ञ की वाणी को व्यवहार से मानता है और सात तत्त्वों का रागसहित विचार करता है, वह भी आदरणीय नहीं है; हेय/ छोड़ने योग्य ही है। धर्मी जीव के शुद्ध आत्मा के आश्रय से प्रगटी हुई वीतरागी पर्याय के आश्रय से भी विकल्प की उत्पत्ति होती है; इसलिये उसकी भी परिगणना परद्रव्य में करके उपादेय नहीं कहा है। शुद्ध आत्मा ही एक धर्म का कारण है; अतः उसी को उपादेय कहेंगे।

वैराग्यवन्त तीक्ष्ण बुद्धिवाले निर्ग्रन्थ मुनि को ''आत्मा'' वास्तव में उपादेय हैं।

कैसे हैं वे मुनि ? **''सहजवैराग्यरूपी महल के शिखर के जो शिखामणि हैं, परद्रव्य से जो पराङ्मुख हैं, पाँच इन्द्रियों के फैलाव से रहित देहमात्र जिनका परिग्रह है, जो परमजिनयोगीश्वर हैं, स्वद्रव्य में जिनकी तीक्ष्ण बुद्धि है ह्न ऐसे आत्मा को 'आत्मा' वास्तव में उपादेय है।''**

पहले ऐसा कहा था कि सातततत्त्व परद्रव्य होने से उपादेय नहीं हैं। अब कहते हैं कि 'आत्मा' ही वास्तव में उपादेय है। शुद्ध चैतन्यस्वभाव के कारण परमात्मा ही वास्तव में आत्मा है, उसकी व्याख्या आगे करेंगे। ''आत्मा उपादेय है'' यह बात मुख्यत: मुनि को लक्ष्य में रखकर की गई है; क्योंकि कुन्दकुन्द भगवान तथा पद्मप्रभमलधारिदेव दोनों ही भावलिंगी समर्थ मुनि थे। **(क्रमश:)**

ज्ञान गोष्ठी

सायंकालीन तत्त्वचर्चा के समय विभिन्न मुमुक्षुओं द्वारा
पूज्य स्वामीजी से पूछे गये प्रश्न और स्वामीजी द्वारा दिये गये उत्तर

प्रश्न : इसमें रुचि की कमी है या भावभासन में भूल है ?

उत्तर : मूल में तो रुचि की ही कमी है।

प्रश्न : हम तत्त्वनिर्णय करने का उद्यम तो करते हैं; परन्तु बीच में प्रतिकूलता आ पड़े तो क्या करें ?

उत्तर : जिसको तत्त्वनिर्णय करना है, उसको तत्त्वनिर्णय में प्रतिकूलता कुछ है ही नहीं। प्रथम तो संयोग आत्मा में आता ही नहीं, संयोग तो आत्मा से भिन्न ही है; इसलिए प्रतिकूल संयोग वास्तव में आत्मा में हैं ही नहीं। फिर सातवें नरक में बाह्यसंयोग तो अनन्त प्रतिकूल हैं, तथापि वहाँ भी अनादि का मिथ्यादृष्टि जीव तत्त्वनिर्णय करके सम्यग्दर्शन प्राप्त कर लेता है। इससे सिद्ध हुआ कि प्रतिकूलता आत्मकल्याण में कोई बाधा नहीं डालती।

जिसको आत्मा की जिज्ञासा जागृत हुई है और सच्चे देव-गुरु निमित्तरूप में मिले हैं, उसको तत्त्वनिर्णय की अनुकूलता ही है, प्रतिकूलता किंचित् भी नहीं है। तत्त्वनिर्णय करने के लिये सच्चे देव-गुरु अनुकूल हैं और अन्तर में अपना आत्मा अनुकूल है। जिसको सच्चे देव-गुरु अनुकूल हैं और अन्तर में आत्मा की रुचि हुई, उसको तो सब अनुकूल ही है। अरे ! उसे कुछ भी प्रतिकूलता बाधक नहीं है।

प्रश्न : जो जीव वस्तुस्वरूप का यथार्थ निर्णय नहीं करता, उसकी स्थिति क्या होती है ?

उत्तर : जो जीव वस्तुस्वरूप का यथार्थ निर्णय नहीं करता, उसका चित्त 'वस्तुस्वरूप किसप्रकार होगा ?' - ऐसे सन्देह से सदा डाँवाडोल अस्थिर बना रहता है और स्व-पर के भिन्न-भिन्न स्वरूप का उसे निश्चय न होने के कारण परद्रव्य के कर्तृत्व की इच्छा से उसका चित्त सदा आकुलित बना रहता है तथा परद्रव्य का उपभोग करने की बुद्धि से उसमें राग-द्वेष के कारण उसका चित्त सदा कलुषित बना रहता है। इसप्रकार वस्तुस्वरूप के निर्णय बिना जीव का चित्त सदा डाँवाडोल और कलुषित रहने से, उसकी स्वद्रव्य में स्थिरता नहीं हो सकती। जिसका चित्त डाँवाडोल तथा कलुषितरूप से परद्रव्य में ही भटकता हो, उसे स्वद्रव्य में प्रवृत्तिरूप चारित्र कहाँ से होगा ? - नहीं हो सकता। इसलिए जिसे पदार्थ के स्वरूप का निर्णय नहीं, उसे चारित्र नहीं होता।

पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव सानन्द सम्पन्न

गजपंथ-नासिक (महा.) : यहाँ सात बलभद्र एवं आठ करोड़ मुनिराजों की निर्वाण भूमि सिद्धक्षेत्र गजपंथ में जिर्णोद्धारित भव्य त्रिकाल चौबीसी मंदिर में विराजमान होनेवाली जिनप्रतिमाओं की प्राण-प्रतिष्ठा हेतु श्री 1008 नेमिनाथ दिगम्बर जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव का आयोजन गुरुवार, दिनांक 12 नवम्बर से बुधवार 18 नवम्बर, 2009 तक अनेक विशिष्ट कार्यक्रमों सहित सानन्द सम्पन्न हुआ।

इस प्रसंग पर त्रिशिखर युक्त भव्य जिनालय में मूलनायक चौबीसवें तीर्थंकर भगवान महावीरस्वामी की 51 इंची श्वेत पद्मासन मनोज्ञ प्रतिमा के साथ-साथ त्रिकाल चौबीसी एवं विदेह क्षेत्रस्थ 20 तीर्थंकरों की पद्मासन प्रतिमायें एवं यहाँ से मुक्ति प्राप्त सात बलभद्रों की वीतराग भाववाही मनोज्ञ खड़गासन प्रतिमायें विराजमान की गईं।

महोत्सव में अन्तरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त तार्किक विद्वान **डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल** के प्रतिदिन ग्रंथाधिराज समयसार की ७३-७४वीं गाथा पर हुये मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला। आपके अतिरिक्त पण्डित ज्ञानचंदजी सोनागिर, डॉ. उत्तमचन्दजी सिवनी, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जबलपुर, पण्डित अनिलजी भिण्ड इत्यादि अनेक विद्वानों के भी प्रवचनों का लाभ उपस्थित जनसमुदाय को मिला।

पंचकल्याणक की सम्पूर्ण प्रतिष्ठा-विधि प्रतिष्ठाचार्य बाल ब्र.धन्यकुमारजी बेलोकर गजपंथा ने सह-प्रतिष्ठाचार्य पण्डित मधुकरजी जलगाँव, ब्र. सुकुमालजी झांझरी उज्जैन, ब्र. रवीन्द्रकुमाजी ललितपुर, ब्र. नन्हेलालजी सागर, पण्डित ऋषभजी शास्त्री छिन्दवाड़ा, पण्डित मनीषजी शास्त्री पिड़ावा, पण्डित सुबोधजी शास्त्री शाहगढ़, पण्डित विरागजी शास्त्री देवलाली, ब्र.मनोजजी जबलपुर, ब्र. श्रेणिकजी जबलपुर, पण्डित सुनीलजी 'धवल' भोपाल, पण्डित कांतिकुमारजी इन्दौर, पण्डित बाबूलालजी बांझल गुना आदि के सहयोग से सम्पन्न कराई गई।

महोत्सव के सम्पूर्ण कार्यक्रम ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री दिल्ली एवं पण्डित रजनीभाई दोशी हिम्मतनगर के निर्देशन में सम्पन्न हुये।

बालक नेमिकुमार के माता-पिता बनने का सौभाग्य श्रीमती इन्द्राबेन शाह-श्री पूनमचंद नाथालाल शाह, मुम्बई को प्राप्त हुआ। महोत्सव के सौधर्म इन्द्र-इन्द्राणी श्री राजेन्द्रभाई वाडीलाल गांधी-श्रीमती नयनाबेन गांधी मुम्बई थे। कुबेर इन्द्र-इन्द्राणी श्री सचिनभाई शशीकांतभाई शाह-श्रीमती तोरलबेन शाह मुम्बई थे। महोत्सव की संपूर्ण विधि के यज्ञनायक श्री विजयभाई सुमतिचंद जैन-श्रीमती भारतीबेन जैन हाथरसवाले मुम्बई थे।

कार्यक्रम का शुभारंभ श्री डाह्यालाल पूंजीराम शाह (मुनईवाला परिवार) मुम्बई के करकमलों से ध्वजारोहणपूर्वक हुआ। सिंहद्वार का उद्घाटन श्री उमाकांतजी अर्पल औरंगाबाद, प्रतिष्ठा मण्डप का उद्घाटन श्रीमती जयश्रीबेन जयप्रकाशजी शहा घाटकोपर ने किया।

आयोजन में लगभग 72 हजार रुपयों का सत्साहित्य एवं 39 हजार 532 घंटों का प्रवचन घर-घर पहुँचा। **ह्न अमरचन्द बेलोकर**

आर्ट ऑफ हैप्पी लिविंग : सेमीनार सम्पन्न

मुम्बई : यहाँ दिनांक 28 नवम्बर 09 को ओसवाल हालारी महाजन वाड़ी (दादर) में दिव्यध्वनि प्रचार-प्रसार ट्रस्ट द्वारा **आर्ट ऑफ हैप्पी लिविंग : द्वितीय सेमीनार** आयोजित किया गया। डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के परामर्श एवं डॉ. शुद्धात्मप्रभाजी टडैया के निर्देशन में आयोजित यह सेमीनार जैन जीवनदर्शन की वैज्ञानिकता व उपयोगिता को युवाओं को समझाने का सुन्दर प्रयास रहा। आयोजन का उद्देश्य युवाओं को जैनतत्त्व के माध्यम से तनाव रहित सुखी व संयमित जीवन जीना सिखाना था।

अतिथियों के सम्मान के बाद प्रारंभ हुये इस कार्यक्रम में युवाओं को चिंतामुक्त रहने के उपाय के रूप में जैनधर्म के गूढ़ रहस्यों को काफी सरल एवं युवा वर्ग की भाषा में समझाया गया।

जीवन में प्रतिसमय अनुभव में आने वाले तनाव का प्रबंधन (मैनजमेन्ट) किस प्रकार किया जाय ह्न इस विषय पर बोलते हुये संचालिका **विदुषी स्वानुभूति जैन** ने कहा कि इच्छायें व दूसरों के प्रति हमारी अपेक्षायें तनाव का मुख्य कारण होती हैं, साथ ही परिस्थितियों को देखने का हमारा नजरिया तनावपूर्ण या तनाव रहित जीवन का कारण होता है।

प्रखर ओजस्वी वक्ता **श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल** ने अपनी विशिष्ट शैली द्वारा बताया कि जीवन में जो भी घटित होता है, उसे समस्या नहीं वरन् वास्तविकता के रूप में स्वीकार कर उसका समाधान खोजकर ही हम सफल व तनाव रहित जीवन जी सकते हैं एवं अनावश्यक पाप बंध से बच सकते हैं। जीवन के मुख्य शत्रु चार कषायों से बचकर ही हम सुखी हो सकते हैं।

इस अवसर पर अन्तरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त विद्वान **डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल** का हीरक जयंती के अवसर पर देश के विविध क्षेत्रों में चल रहे सम्मान समारोह की शृंखला में यहाँ खचाखच भरे सभागृह में **श्री लक्ष्मीचंद भगवानजीभाई शाह परिवार लन्दन** द्वारा डॉ. भारिल्ल को शॉल ओढाकर, श्रीफल, अंगवस्त्र, कुर्ता बटन आदि भेंटकर सम्मानित किया गया। **श्रीमती गुणमाला भारिल्ल** का सम्मान श्रीमती सुशीलाबेन लंदन ने किया।

डॉ. भारिल्ल ने अपने वक्तव्य में कहा कि सप्त व्यसनों के त्याग एवं अष्टमूल गुणों के धारण से ही हम जैन कहलाते हैं। प्रत्येक व्यक्ति अपने सुख-दु:ख का उत्तरदायी स्वयं है। जीवन को धर्म के अनुसार ढालकर ही हम तनावमुक्त हो सकते हैं।

कार्यक्रम की अध्यक्षता **श्री कांतिभाई मोटानी मुम्बई** ने की। मुख्य अतिथि के रूप में **श्री राजूभाई घाटकोपर** मंचासीन थे। मङ्गलाचरण श्रीमती ज्योति गाला ने किया। लगभग 4 घण्टे चले इस कार्यक्रम में 600 लोगों ने भाग लिया और मुक्त कंठ से प्रशंसा की। **– विद्या उत्तम शाह**

(पृष्ठ 20 का शेष ...) सर्वज्ञ-वीतराग होने पर भी कोई इनको रागी-द्वेषी-शस्त्रधारी-वस्त्रधारी आदि विकृत स्वरूप से माने तो वे लोग सच्चे देव का स्वरूप नहीं जानते, भगवान राम वगैरह को वे नहीं पहचानते और अपने अज्ञान से कुदेव की पूजन करते हैं; वे भगवान तो सच्चे भगवान ही हैं; किन्तु इसको उनकी पहचान नहीं है। राम-हनुमान आदि भी अरिहन्त परमात्मा होकर मोक्ष गये हैं ह्न वे सब भी अरिहन्तदेव ही हैं, सर्वज्ञ-वीतराग परमात्मा हैं, तो भी कोई अज्ञानी उनको वस्त्रादि परिग्रह सहित मानकर पूजे तो इससे अरिहन्त भगवान दोषी नहीं हो जाते; अपितु उनका स्वरूप विपरीत माननेवाले को ही मिथ्यात्व होता है और उसकी मान्यता में कुदेवसेवन होता है। **(क्रमश:)**

गुरुदेवश्री का स्मृति दिवस मनाया

1. **नागपुर (महा.) :** यहाँ अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन के तत्त्वावधान में सोमवार, दिनांक 9 नवम्बर को गुरुदेवश्री कानजीस्वामी का पुण्य स्मृति दिवस मनाया गया।

इस अवसर पर आयोजित विशिष्ट संगोष्ठी के अन्तर्गत श्री महावीर विद्यानिकेतन के छात्रों ने गुरुदेवश्री के जीवन परिचय पर प्रकाश डाला।

पण्डित अशोकजी शास्त्री ने कहा कि मरण समय परिस्थितियाँ कैसी है ?- यह महत्वपूर्ण नहीं है; अपितु उस जीव के परिणाम कैसे हैं ? अन्दर की तैयारी कैसी है ? यह महत्त्वपूर्ण है। **पण्डित विपिनजी शास्त्री** ने कहा कि बाह्य आचरण को न देखकर महापुरुषों के विचारों को अपना आदर्श बनाना चाहिये; विचारधारा से जीवन में सरलता आती है। गुरुदेवश्री ने न केवल मत परिवर्तन किया; अपितु श्रद्धा और विचारों को भी दृढ बनाकर जिनवाणी का हार्द खोला।

2. **अलवर (राज.) :** यहाँ दिनांक 9 नवम्बर को कुन्दकुन्द स्मृति ट्रस्ट एवं मुमुक्षु मण्डल फैडरेशन के संयुक्त तत्त्वावधान में गुरुदेवश्री कानजी स्वामी का पुण्यतिथि समारोह संपन्न हुआ।

समारोह के अन्तर्गत सर्वप्रथम प्रात: सामूहिक पूजन रखी गई, तत्पश्चात् गुरुदेवश्री का सी.डी. प्रवचन तथा पण्डित निलयजी शास्त्री व पण्डित अरुणजी शास्त्री के प्रवचन का लाभ मिला। इस अवसर पर आयोजित श्रद्धांजली सभा में श्री प्रेमचन्दजी, श्री अरुणजी शास्त्री एवं श्री अमितजी शास्त्री ने गुरुदेवश्री के संबंध में अपने भाव व्यक्त किये।

ब्र. यशपालजी द्वारा तत्त्वप्रचार

1. **डोंबीवली-पूर्व (मुम्बई) :** यहाँ दिनांक 18 एवं 19 नवम्बर को ग्रंथाधिराज **समयसार** पर दिन में दो बार प्रवचन हुये।

2. **इचलकरंजी-कोल्हापुर (महा.) :** यहाँ स्थित बोर्डिंग मंदिर में 20 से 22 नवम्बर तक **कर्म के दसकरण** विषय पर 3 प्रवचन हुये।

3. **बेलगांव (कर्नाटक) :** यहाँ स्थित महावीर भवन में 30 नवम्बर व 1 दिसम्बर को अनेक कार्यक्रम संपन्न हुये, जिनमें मुख्य रूप से **प्रवचनसार (कन्नड़)** का विमोचन हुआ। ब्र. यशपालजी जैन के प्रवचन प्रथम दिन **प्रवचनसार का परिचय** विषय पर तथा दूसरे दिन **प्रवचनसार की 5वीं गाथा की टीका** पर हुये, साथ ही विदुषी धवलश्री एवं ए. आनंदकुमार के समयसार पर प्रवचन हुये। सैंकड़ों लोगों ने प्रवचनसार (कन्नड़) क्रय किया। कार्यक्रम में बैंगलोर, मैसूर, सांगली, कोल्हापुर आदि स्थानों से साधर्मीजन पधारे।

4. **मलाड-पूर्व (मुम्बई) :** यहाँ 3 से 5 दिसम्बर को उत्कर्ष मुमुक्षु मण्डल में **कर्म के स्वरूप** विषय पर प्रवचन हुये, जिसे लोगों ने अत्यंत रूचिपूर्वक सुना।

5. **ध्रुवधाम-बांसवाड़ा (राज.) :** यहाँ दिनांक 7 से 14 दिसम्बर तक प्रतिदिन तीनों समय कर्म के दसकरण (कर्म की दस अवस्थायें) विषय पर कक्षायें चलीं। यहाँ विद्यार्थियों ने इसके संबंध में अनेक शंकाओं का समाधान प्राप्त किया। मुनि जीवन के संबंध में अनेक शंकाओं का समाधान किया गया। पुण्य-पाप, धर्म, शुद्धोपयोग-शुद्धपरिणति, ज्ञानधारा-कर्मधारा आदि अनेक विषयों पर भी प्रश्नोत्तरों के माध्यम से चर्चा हुयी।

पाषाण शुद्धि कार्यक्रम सम्पन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ आरती मार्बल, अजमेर रोड पर दिनांक २७ नवम्बर को श्री आदिनाथ-कुन्दकुन्द-कहान दिगम्बर जैन ट्रस्ट, अलीगढ द्वारा मङ्गलायतन विश्वविद्यालय में निर्माणाधीन महावीरस्वामी जिनमंदिर हेतु विराजमान होने वाले जिनबिम्बों के शिलाखण्ड की शास्त्रोक्त विधि से शुद्धि का भव्य कार्यक्रम आयोजित किया गया।

इस अवसर पर प्रात: पूजन के पश्चात् गुरुदेवश्री के मांगलिक प्रवचन का लाभ मिला। आयोजित सभा का प्रारंभ कुमारी परिणति पाटील के मङ्गलाचरण से हुआ। सभा की अध्यक्षता श्री अजितप्रसादजी जैन दिल्ली ने की। विद्वत्वर्ग में पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल के मार्मिक उद्बोधन का लाभ मिला। श्री पवनजी जैन अलीगढ ने दिसम्बर-२०१० में होनेवाले पंचकल्याणक की रूपरेखा एवं विश्वविद्यालय में जैनतत्त्वज्ञान की गतिविधियों का विस्तृत परिचय सभा को दिया।

इसी प्रसंग पर शिल्पकारों का सम्मान करते हुये उन्हें प्रतिमा निर्माण में शुद्धता रखने हेतु आवश्यक प्रतिज्ञायें दिलाई गई। तत्पश्चात् पाषाणशुद्धि का कार्य सम्पन्न हुआ। इसके अन्तर्गत टोडरमल महिला मण्डल की सदस्याओं एवं अन्य सभी बहनों द्वारा पाषाण की शुद्धि की गई तथा उपस्थित जनसमुदाय द्वारा स्वस्तिक बनाया गया।

मंचासीन अतिथियों में श्री अजितजी बड़ौदा, श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल, पण्डित शांतिकुमारजी पाटील, श्री सी.एस.जैन देहरादून, प्रो.पी. के.जैन रुडकी, पं. संजीवजी गोधा एवं पं. पीयूषजी शास्त्री सम्मिलित थे।

विधि-विधान के समस्त कार्य ब्र.अभिनन्दनकुमारजी शास्त्री खनियांधाना, पण्डित ऋषभजी शास्त्री छिन्दवाड़ा एवं पण्डित संजयजी शास्त्री अलीगढ ने सम्पन्न कराये।

इस अवसर पर श्री टोडरमल महाविद्यालय जयपुर एवं आदिनाथ विद्यानिकेतन अलीगढ के छात्रों की उपस्थिति उल्लेखनीय रही।

संपूर्ण कार्यक्रम श्री पवनजी जैन अलीगढ एवं श्री अशोकजी लुहाड़िया के निर्देशन में संपन्न हुये।

धर्म प्रभावना

जयपुर (राज.) : यहाँ श्री अम्बाबाडी दिगम्बर जैन मंदिर में दिनांक 12 से 18 नवम्बर, 2009 तक समाज के विशेष आग्रह पर एक विशिष्ट शिविर का आयोजन किया गया।

इस प्रसंग पर प्रतिदिन सायंकाल पण्डित राजेशजी शास्त्री शाहगढ द्वारा **छहढाला** पर सारगर्भित प्रवचन एवं तदुपरान्त पण्डित संजीवकुमारजी गोधा जयपुर द्वारा **तीन लोक (जैन भूगोल)** विषय पर विशेष कक्षा चलाई गई। सभी ने अभूतपूर्व लाभ लिया।

इसके पूर्व स्थानीय महिला मण्डल द्वारा जिनेन्द्र भक्ति का सुन्दर आयोजन किया गया। स्थानीय जैन समाज एवं मंदिर पदाधिकारियों ने धर्म प्रभावना के इस आयोजन की मुक्त कंठ से प्रशंसा करते हुये इसप्रकार के लघु शिविर आगामी काल में भी लगाते रहने की घोषणा की।

शोक समाचार

1. **मुम्बई निवासी श्रीमती कंचनदेवी पाटनी धर्मपत्नी स्व. श्री सौभागमलजी पाटनी** का दिनांक 6 दिसम्बर को विशुद्धपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आप अत्यंत स्वाध्यायी महिला थीं; आपने जयपुर में कई वर्षों तक रहकर धर्मलाभ लिया था। अनेकों बार आप जयपुर शिविर में पधारकर प्रवचनों का लाभ लेती थीं।

2. **सरदारशहर-चूरू (राज.) निवासी श्रीमती किस्तूरीदेवी पुगलिया** का 78 वर्ष की आयु में दि. 25 नवम्बर को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आप बहुत स्वाध्यायी थीं; जयपुर शिविर में लगभग 20 वर्षों से प्रतिवर्ष पधारकर लाभ लेती थीं। आपकी स्मृति में वीतराग-विज्ञान एवं जैनपथप्रदर्शक में कुल 1100/- प्राप्त हुये हैं।

3. **बड़ौत-बागपत (उ.प्र.) निवासी श्री प्रेमचंदजी जैन** का दिनांक 30 अक्टूबर को शांतपरिणामों एवं समाधिमरणपूर्वक देहावसान हो गया। आपकी स्मृति में 1100/- साहित्य की कीमत कम करने में, 500/- जैनपथप्रदर्शक एवं 500/- वीतराग-विज्ञान हेतु प्राप्त हुये हैं।

4. **फिरोजाबाद (उ.प्र.) निवासी श्री वीरेन्द्रवीर जैन** का दिनांक 8 दिसम्बर को देहावसान हो गया। आप बहुत स्वाध्यायी थे; जयपुर में लगनेवाले प्रत्येक शिविर में आप पधारते थे। दसलक्षण पर्व में प्रवचनार्थ भी जाया करते थे। ज्ञातव्य है कि आप टोडरमल महाविद्यालय के स्नातक पण्डित अनंतवीर शास्त्री एवं पण्डित अरहंतवीर शास्त्री के दादाजी थे। आप अ.भा. जैन युवा फैडरेशन पश्चिमी उत्तरप्रदेश के अनेक वर्षों तक अध्यक्ष रहे एवं वर्तमान में उत्तरप्रदेश के संरक्षक थे।

5. **बड़नगर-उज्जैन (म.प्र.) निवासी श्री विमलचंदजी शाह** का 72 वर्ष की आयु में दिनांक 13 नवम्बर को देहावसान हो गया। आपने गुरुदेवश्री के सानिध्य में गहन तत्त्वाभ्यास किया था। आप प्रारंभ से ही बड़नगर में मुमुक्षु समाज से जुड़े रहे तथा बाद में कुन्दकुन्द कहान ट्रस्ट मुम्बई से भी जुड़े। आपके निधन से बड़नगर मुमुक्षु समाज को अपूरणीय क्षति हुई है।

दिवंगत आत्मायें शीघ्र ही अभ्युदय को प्राप्त हों ह्न यही भावना है।

वेदी प्रतिष्ठा महोत्सव सम्पन्न

देवलाली-नासिक (महा.) : यहाँ दिनांक 25 से 27 नवम्बर तक श्री कानजीस्वामी स्मारक ट्रस्ट द्वारा श्री 1008 भगवान शांतिनाथ कुंदकुंद कहान दि.जैन मंदिर में नवनिर्मित वेदी पर भगवान पार्श्वनाथ जिनबिम्ब तथा आचार्य कुंदकुंददेव की प्रतिमा श्री रमेशभाई पोपटलाल वोरा परिवार हस्ते अरुणाबेन तथा श्रीमती शांताबेन बालचंद भाई शाह परिवार हस्ते जिग्नेशभाई शाह की ओर से विराजमान की गई।

इस अवसर पर अन्तरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त तार्किक विद्वान **डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल** के णमोकार महामंत्र विषय पर मोक्षपाहुड़ तथा समयसार की गाथाओं के आधार से मार्मिक व्याख्यान हुये। आपके अतिरिक्त पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, ब्र. हेमचंदजी हेम देवलाली, पण्डित राजेन्द्रजी जबलपुर, पण्डित अनिलजी भिण्ड आदि विद्वानों के भी प्रवचनों का लाभ मिला। प्रतिदिन गुरुदेवश्री के सी.डी.प्रवचनों का लाभ भी मिला।

विधि-विधान के कार्य ब्र.जतीशचंदजी शास्त्री के निर्देशन में संपन्न हुये। **- भरत शाह**

सकल जैन समाज विदिशा द्वारा अभिनन्दन

विदिशा (म.प्र.) : यहाँ दिनांक 20 नवम्बर को दि.जैन बड़ा मंदिर में तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंद भारिल्ल का प्रवचन एवं तत्पश्चात् हीरक जयंती समारोह आयोजित किया गया, जिसमें विदिशा के जैन समाज के अतिरिक्त विभिन्न संस्थाओं ने भी डॉ. भारिल्ल का सम्मान किया।

इस अवसर पर श्री राजेशजी जैन (विदिशा व्यापार महासंघ), श्री रवि पटेल (विदिशा मुमुक्षु मण्डल), श्री मलूकचंदजी जैन (विदिशा परवार ट्रस्ट), श्री आर.के. जैन (विदिशा परवार जैन समाज), श्री प्रकाशजी चौधरी (अध्यक्ष-सकल दि.जैन समाज विदिशा), श्री प्रकाशजी जैन, श्री राजकुमारजी जैन एवं पण्डित शिखरचंदजी जैन (दि.जैन बड़ा मंदिर ट्रस्ट), श्री दीपकजी सेठ (स्टेशन जैन मंदिर), श्री राघवजी भाई (विधायक एवं वित्तमंत्री, विदिशा), डॉ. सरल जैन, श्री अविनाशजी जैन एवं श्री सुखलालजी जैन (दि.जैन तारण समाज), डॉ. पदम जैन एवं श्री अशोकजी मानोरिया (गोलालारी समाज), डॉ. पाटनी (खण्डेलवाल जैन समाज) एवं श्री अनिलजी सिंघई (चन्द्रप्रभ ट्रस्ट) द्वारा डॉ. भारिल्ल का सम्मान किया गया। इनके अतिरिक्त विदिशा के सभी मंदिरों के ट्रस्टी एवं अध्यक्ष, महिला मुमुक्षु मण्डल एवं महिला मण्डल विदिशा ने भी डॉ. भारिल्ल का सम्मान किया।

ब्र. अमित भैया ने अपने वक्तव्य में डॉ. भारिल्ल के जीवन पर प्रकाश डाला तथा पण्डित शिखरचंदजी ने उनके साहित्य के लेखन पर अपने विचार व्यक्त किये। और भी अनेक लोगों ने अपने विचार व्यक्त किये। तत्पश्चात् डॉ. भारिल्ल के उद्बोधन का लाभ उपस्थित जनसमुदाय को मिला।

कार्यक्रम में टोडरमल महाविद्यालय के स्नातक डॉ. मुकेशजी शास्त्री, पण्डित विनोदजी शास्त्री, पण्डित राजेशजी शास्त्री, पण्डित चिन्मयजी शास्त्री, पण्डित अविरलजी शास्त्री, पण्डित नितिनजी शास्त्री एवं पण्डित आशीषजी शास्त्री ने भी अपने गुरु का सम्मान किया। विदिशा जैन समाज में डॉ. भारिल्ल का सम्मान करने का उत्साह इतना अधिक था कि रात्रि में रेल्वे स्टेशन पर ही लगभग 100 -150 लोगों ने हार-मालायें पहनाकर भव्य स्वागत किया।

रात्रि 8 से 11 बजे तक चले इस कार्यक्रम में लगभग एक हजार लोगों की उपस्थिति रही। कार्यक्रम का संचालन डॉ. विद्यानंदजी जैन ने किया।

डॉ. भारिल्ल द्वारा विशेष व्याख्यान

विदिशा (म.प्र.) : बरकतउल्ला विश्वविद्यालय, भोपाल द्वारा सेठ शिताबराय लक्ष्मीचंद जैन कॉलेज सभागृह विदिशा (म.प्र.) में दिनांक 21 नवम्बर को आयोजित विश्वविद्यालयीन व्याख्यानमाला की दशम श्रृंखला में अन्तरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंद भारिल्ल का व्याख्यान **जैन दर्शन के परिप्रेक्ष्य में अनेकांत और स्याद्वाद** विषय पर हुआ।

अतिथियों के माल्यार्पण के पश्चात् सेठ राजेन्द्रकुमारजी जैन ने स्वागत उद्बोधन में कहा कि 'यह सहज संयोग है कि डॉ. भारिल्ल 75 वर्ष के हो रहे हैं और हमारी संस्था को भी 75 वर्ष हो गये हैं। यह दोनों का ही हीरक जयन्ती वर्ष है।'

सभा की अध्यक्षता प्रो. डॉ. रविन्द्रजी जैन (कुलपति बरकतउल्लाह विश्वविद्यालय) ने की। मुख्य अतिथि के रूप में मा. राघवजी भाई (वित्तमंत्री म.प्र.शासन) मौजूद थे। अन्त में आभार प्रदर्शन डॉ. आर.के.जैन (प्राचार्य-जैन महाविद्यालय विदिशा) ने किया।

तारण-तरण समाज द्वारा अभिनन्दन

होशंगाबाद (म.प्र.) : यहाँ दिनांक 22 से 24 नवम्बर तक तारण-तरण दि.जैन समाज द्वारा आगम के प्रकाण्ड विद्वान डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल का हीरक जयन्ती समारोह मनाया गया।

इस अवसर पर श्री प्रभात गिल्ला (अध्यक्ष-तारण-तरण दि.जैन समाज होशंगाबाद) द्वारा डॉ. भारिल्ल को शॉल, श्रीफल एवं अभिनन्दन-पत्र भेंट कर सम्मानित किया गया, इनके अतिरिक्त डॉ. राजेन्द्र जैन (दि.जैन समाज होशंगाबाद), श्रीमती विमला समैया (तारण-तरण शिक्षा समिति), श्री सुनील समैया (अध्यक्ष-व्यापारी मंडल होशंगाबाद) एवं श्रीमती नीरजा फौजदार (अध्यक्षा-तारण-तरण महिला मण्डल) आदि अनेक लोगों ने डॉ. भारिल्ल का सम्मान किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री आनंदमोहनजी मस्ते ने की। मुख्य-अतिथि श्री सुभाषजी दिगम्बर थे।

अभिनन्दन-पत्र का वांचन तारण-तरण दि. जैन समाज के सचिव डॉ. प्रशांत जैन ने किया। यहाँ पहले से ही उपस्थित पण्डित पूनमचंदजी छाबड़ा का सम्मान श्री दीपचंदजी समैया ने शॉल व श्रीफल भेंटकर किया।

श्री तारण जयन्ती के उपलक्ष्य में तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंद भारिल्ल का तारणस्वामी द्वारा विरचित ज्ञान समुच्चयसार ग्रंथ पर सारगर्भित प्रवचन हुआ।

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

31 से 4 जनवरी, 2010	चैन्नई	व्याख्यानमाला एवं हीरक जयंती
9 व 10 जनवरी, 2010	अहमदाबाद (चैतन्यधाम)	महासमिति सम्मेलन
16 व 17 जनवरी	इन्दौर	विधान
18 व 19 जनवरी	खैरागढ	पूरे छत्तीसगढ की ओर से हीरक जयंती
15 से 17 फरवरी	चन्देरी (म.प्र.)	मंदिर शिलान्यास एवं हीरक जयंती
17 व 18 फरवरी	टीकमगढ	प्रवचन एवं हीरक जयन्ती
19 से 21 फरवरी	ललितपुर	प्रवचन एवं हीरक जयन्ती
8 से 11 मार्च	निसई (म.प्र.)	प्रवचन एवं हीरक जयन्ती
12 से 14 मार्च	सागर	प्रवचन एवं हीरक जयन्ती
15 व 16 मार्च	खड़ैरी (म.प्र.)	प्रवचन एवं हीरक जयन्ती
28 मार्च	उदयपुर	महावीर जयन्ती/हीरक जयन्ती
11 मई से 3 जून	देवलाली	गुरुदेव जयंती, प्रशिक्षण शिविर एवं हीरक जयन्ती समापन समारोह
4 जून से 25 जुलाई	विदेश	धर्म प्रचारार्थ
1 से 10 अगस्त	जयपुर	महाविद्यालय शिक्षण शिविर